नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

ब्रिक्स में भारत की कूटनीतिक सफलता

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में सर्वसम्मति से संयुक्त घोषणा-पत्र जारी होना मेजबान भारत की सबसे बड़ी कूटनीतिक उपलब्धि है. यह उपलब्धि इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि ब्रिक्स कोई एकरूप संगठन नहीं, बल्कि परस्पर विरोधी हितों वाले देशों का समूह है. इसमें ईरान है तो संयुक्त अरब अमीरात और सऊदी अरब भी हैं, भारत है तो चीन भी है और रूस-पश्चिम के बीच जारी तनाव की छाया भी संगठन पर है. ऐसे में 45 पृष्ठ और करीब 150 बिंदुओं वाले घोषणा-पत्र पर सभी सदस्य देशों की सहमति बनाना आसान नहीं था. भारत ने यह दिखा दिया कि वह विरोधाभासों के बीच सहमति बनाने की क्षमता रखने वाली शक्ति है. घोषणा-पत्र में पहलगाम आतंकी हमले की स्पष्ट निंदा और आतंकवाद के खिलाफ जीरो टॉलरेंस का संदेश भारत की महत्वपूर्ण कूटनीतिक जीत है. आतंकवाद के वित्त पोषण और उसके संरक्षकों के खिलाफ कार्रवाई की जरूरत पर सहमति इस लड़ाई को वैश्विक स्वर देने की दिशा में अहम कदम है. संयुक्त राष्ट्र और अन्य वैश्विक संस्थाओं में सुधार तथा भारत और ब्राजील की बड़ी भूमिका के समर्थन से भी भारत की वैश्विक दावेदारी को मजबूती मिली है. आर्थिक मोर्चे पर भी सम्मेलन ने ठोस आधार तैयार किया है. सदस्य देशों के बीच स्थानीय मुद्राओं में व्यापार और तेज एवं सरल सीमा-पार भुगतान प्रणाली की दिशा में सहमति डॉलर आधारित व्यवस्था के विकल्पों की तलाश को गति दे सकती है. एकतरफा आर्थिक प्रतिबंधों, टैरिफ और गैर-टैरिफ बाधाओं के विरोध का संदेश भी महत्वपूर्ण है. यह किसी देश के खिलाफ सीधा मोर्चा नहीं, बल्कि नियम आधारित और बहुपक्षीय व्यापार व्यवस्था की वकालत है. समुद्री और अंतरराष्ट्रीय व्यापारिक मार्गों को बाधित नहीं किए जाने पर प्रधानमंत्री मोदी का जोर भारत के बढ़ते व्यापारिक हितों के लिहाज से खासा महत्वपूर्ण है.सम्मेलन की सफलता का एक और पैमाना इसमें दुनिया के प्रमुख नेताओं की भागीदारी है. रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन, चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग और ईरान के राष्ट्रपति समेत महत्वपूर्ण शासनाध्यक्षों की मौजूदगी ने भारत के कूटनीतिक महत्व को रेखांकित किया. इससे भी अधिक उल्लेखनीय यह रहा कि लगभग सभी प्रमुख नेता प्रधानमंत्री मोदी के साथ द्विपक्षीय संवाद के इच्छुक रहे. रूस-यूक्रेन और अमेरिका-ईरान जैसे संघर्षों के बीच मोदी ने युद्ध समाप्त करने, संवाद और कूटनीति को रास्ता बनाने की दो टूक सलाह देकर भारत की स्वतंत्र विदेश नीति का तेवर भी स्पष्ट किया.चीन के राष्ट्रपति शी जिनपिंग के साथ बातचीत में सीमा पर शांति और समझौतों के पालन को प्राथमिकता देना भी भारत की स्पष्ट रणनीति को दर्शाता है. मोदी का संदेश साफ है कि मतभेद विवाद में नहीं बदलने चाहिए और संबंधों को पारस्परिक सम्मान, संवेदनशीलता और हितों के आधार पर आगे बढ़ना चाहिए. ब्रिक्स सम्मेलन ने अंतत: यही साबित किया है कि भारत अब केवल वैश्विक मंच का सहभागी नहीं, बल्कि सहमति निर्माण की भूमिका निभाने वाली शक्ति बन चुका है. बदलती विश्व व्यवस्था में भारत की सबसे बड़ी पूंजी यही कूटनीतिक विश्वसनीयता है.

विंध्य की डायरी

उप मुख्यमंत्री निवास पर सुरक्षा में इतनी बड़ी चूक कैसे...?

डॉ. रवि तिवारी

राजनीति का गिरता हुआ चरित्र आज एक गंभीर और चिंता का विषय बन गया है. जहां वैचारिक मूल्यों की जगह केवल सत्ता प्राप्ति और अवसरवादी सोच हावी हो रही है. राजनीतिक मर्यादा और चरित्र में गिरावट को लेकर काफी चिंताएं है. किसी भी परिस्थिति में किसी नेता के घर पर जबरन घुसना कहीं से भी सही नहीं है.

राजनीति में शुचिता लाने और अपनी बात रखने के लिये लोकतंत्र में कई अन्य रास्ते उपलब्ध है. लोकतंत्र में शांतिपूर्ण तरीके से अपनी असहमति जताने और प्रदर्शन करने का पूरा अधिकार है. जच्चा-बच्चा की मौत के विरोध में जिस तरह से प्रदेश के उप मुख्यमंत्री एवं स्वास्थ्य मंत्री राजेन्द्र शुक्ला के निज निवास रीवा में यूथ कांग्रेस ने जबरन प्रवेश किया , उसमें उन्हें आलोचना का सामना करना पड़ा. साथ ही एक गंभीर सुरक्षा चूक है. पुलिस और खुफिया तंत्र पूरी तरह से असफल रहा है, आखिर इतनी बड़ी चूक हुई कैसे. जिम्मेदार पुलिस अधिकारियों पर घटना को लेकर जिम्मेदारी तय होनी चाहिये. लोकतंत्र में किसी भी नीति, घटना या विफलता के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन करना, पुतला फूंकना, धरना देना या ज्ञापन सौंपना वैध राजनीतिक चरित्र माना जाता है. इसके विपरीत आवास में घुस कर मुर्दाबाद के नारे लगाना अभद्रता करना राजनीतिक मर्यादा के खिलाफ है और यह अराजकता की श्रेणी में आता है. एक सवाल यह खड़ा होता है कि घटना के दूसरे दिन सत्ताधारी दल भाजपा सांसद के नेतृत्व में अपनी ही सरकार में प्रदर्शन कर आईजी को ज्ञापन सौंपकर प्रकरण दर्ज करने की मांग की जाती है और चंद घंटों में एफआईआर भी दर्ज होती है, ऐसे में सवाल उठना लाजमी है. सार्वजनिक जीवन में उच्च मानवीय मूल्यों, ईमानदारी और जवाबदेही बनाए रखना है. राजनीतिक दलों में अब स्थाई वैचारिक प्रतिबद्धता नही दिखती, बल्कि दलगत स्वार्थ और जुमलेबाजी ने उनकी जगह ले ली है.

विधायक ने जनता को बताया 'अनपढ़'

जिस जनता ने वोट देकर आम आदमी को माननीय विधायक बनाया, उसी जनता को अब विधायक गरीब और अनपढ़ बता रहे हैं .अनपढ़ वाले बयान के सामने आने के बाद स्थानीय जनता और कांग्रेस पार्टी ने इसे जनता का अपमान और घमंड बताया. जिसके कारण राजनीति गरमा गई है. दरअसल मुख्यमंत्री जन विश्वास अभियान शिविर के दौरान सिरमौर से भाजपा विधायक दिव्यराज सिंह ने कहा कि सिरमौर की जनता अनपढ़ और गरीब है. उन्होंने यह संदर्भ दिया कि लोग नहीं समझ पाते कि वे किस चीज का फार्म भर रहे हैं या उन्हें योजनाओं का सही समय पर लाभ क्यों नहीं मिल पा रहा है. अब बड़ा सवाल यह उठता है कि विधायक जी 12 वर्ष से विधायक हैं आपने अनपढ़ और गरीबी हटाने के लिये क्या किया. क्योंकि चुनाव तो गरीबी हटाओ और शिक्षा देने के नाम पर होते हैं तो फिर आपने उसके समाधान के लिये प्रयास क्यों नही किया? क्या इसमें भी कांग्रेस का दोष है, मतलब साफ है आपने जिम्मेदारी का निर्वहन ईमानदारी से नहीं किया. जनता चाहे अनपढ़ हो या गरीब लेकिन आपको अपना जनप्रतिनिधि चुना है. सार्वजनिक सभा से क्षेत्र की जनता का इस तरह का उपहास उड़ाना तुष्टिकरण की राजनीत का परिचायक है. अनपढ़ जनता ने ही लगातार तीन बार माननीय विधायक बनाया है.

भारत की सांस्कृतिक चेतना की उन्नायक हिन्दी

> हिन्दी के सर्वतोन्मुखी विकास के लिए एकपक्षीय दृष्टिकोण का परित्याग आवश्यक करते हुए सरकारी और गैर सरकारी सभी साधनों के एकत्रीकरण एवं सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है और उच्च कोटि की ध्येय निष्ठा के साथ अनवरत साधना की भावना ही हिन्दी के वांगमय को समृद्ध बना सकती है. हिन्दी में आधुनिक ज्ञान विज्ञान भूगोल, खगोल चिकित्सा, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंजीनियरिंग, कृषि, अर्थशास्त्र,दर्शन अध्यात्म,गणित आदि की सभी शाखाओं में आधुनिकतम वैश्विक स्तर के मौलिक और प्रामाणिक ग्रंथों का सृजन,वैश्विक स्तर के शब्द भंडार,डिजिटल संपदा का निर्माण और आधुनिक ढंग से उत्कृष्टतम शोध कार्य युद्ध स्तर पर करने की आवश्यकता है. जिस दिन हिंदी रोजगार की कुंजी और अंतर्राष्ट्रीय ज्ञान का प्रवेश द्वार बनने की क्षमता अर्जित कर लेगी उस दिन हिंदी दिवस सार्थक हो जाएगा. **कोटि कोटि कंठों की भाषा , जनगणना की मुखरित अभिलाषा, हिन्दी है पहचान हमारी, हिन्दी है हम सबकी परिभाषा.**

डॉ. अशोक कुमार भार्गव, पूर्व आईएएस

14 सितंबर को हिन्दी दिवस का आगमन हिन्दी जगत के लिए उमंग उत्साह और ऊर्जा से भरा हुआ उत्सव होता है जिसका समापन हिन्दी सप्ताह और हिन्दी पखवाड़े में आयोजित

विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं के विजेताओं को पुरस्कृत करने और हिन्दी सेवियों हिंदी प्रेमियों तथा हिंदी साधकों के श्रेष्ठतम कार्यों के सम्मान के साथ एक कर्मकांड के रूप में होता है. हिन्दी दिवस पर हम बड़े ही आत्मविश्वास के साथ हिन्दी की गरिमा, उसकी महिमा और उसके अप्रतिम गौरव का गुणगान तो करते हैं किंतु वास्तव में हम हिंदी की दशा को लेकर अपेक्षित गंभीर नहीं होते जबकि यह दिन हमारे आत्म मूल्यांकन का आत्मविश्लेषण का होता है कि हमने हिन्दी के भविष्य को स्वर्णिम बनाने की दिशा में क्या महती अवदान दिया है. यह सही है कि हिंदी हमारी अस्मिता की पहचान और भारत की आत्मा है. यह हमारी सांस्कृतिक चेतना को सूक्ष्मता से अभिव्यक्त करने की संपदा है. यह हमारे सार्वभौमिक मूल्यों की विधायिका है जो समग्र राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधती है,यह केवल संवाद की भाषा ही नहीं है,बल्कि यह एक समृद्ध, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक विरासत की संवाहिका है. वसुधैव कुटुम्बकम की भावना अर्थात वैश्विक भाईचारे और एकता की भावना जाग्रत कर जन जन में आत्माभिमान स्वाभिमान का भाव उत्पन्न करती है. परस्पर सम्मान जुड़ाव विनम्रता सहिष्णुता संवेदनशीलता और समरसता का भाव हिन्दी की अंतर्निहित प्रकृति है. इसीलिए हिन्दी जन जन की अभिलाषा के अनुरूप समग्र राष्ट्र में संपर्क की भाषा बनी है.

मध्यकाल में हिन्दी भक्ति आंदोलन के धार्मिक और सामाजिक सुधारों की भाषा बनी और स्वाधीनता संग्राम के राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले आदर्शों को हिन्दी ने मुखरता के साथ सशक्त किया.

हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लम्बे संघर्ष के बाद 14 सितंबर,1949 को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 में प्रावधान किया गया कि संघ की सरकारी भाषा देवनागरी लिपि में हिंदी होगी और संविधान के लागू होने के समय से 15 वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी प्रयोजनों के लिए अंग्रेजी का प्रयोग होता रहेगा. 1963 में बनाए गए राजभाषा अधिनियम के अनुसार ऐसी व्यवस्था कर दी गई कि 26 जनवरी1965 के पश्चात भी अंग्रेजी राजकाज की भाषा बनी रहेगी. किसी निश्चित अवधि का उल्लेख वहां नहीं है यदि एक भी राज्य हिंदी का प्रयोग ना चाहे तब भी हिंदी राजकाज की अनिवार्य भाषा नहीं हो सकेगी.

निशानेबाज

ट्रंप का रेवड़ी बांटने का इरादा चलाया अपनी तस्वीर का सिक्का

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप ने जीते जी अपनी तस्वीर वाला 1 डॉलर का सिक्का चला दिया. अपने 95 रुपए का 1 डॉलर होता है. ऐसा है डॉलर का डीलडौल! कहते हैं- अमेरिका इज ग्रेट, बट डॉलर इज आलमाइटी!' हमने कहा, 'ट्रंप स्वच्छंद हैं. वह जो चाहे सो कर सकते हैं. भारत में जिस प्रकार राजनीतिक पार्टियां चुनाव के वक्त रेवड़ी बांटती हैं वैसा ही बुखार ट्रंप को भी चढ़ गया है. उन्होंने जुमला दिया कि मध्यावधि चुनाव में उनकी रिपब्लिकन पार्टी जीती तो हर नागरिक को 5,000 डॉलर देंगे. आपको यह भी मालूम होना चाहिए कि ट्रंप सनक में आकर कुछ स्थानों के नाम भी बदल रहे हैं. उन्होंने लेक ओंटेरियो नामक झील का नाम बदलकर लेक अमेरिका कर दिया. उनके दबाव में आकर गूगल व एपल ने अपने मैप एप्लीकेशन में भी अमेरिकी नागरिकों के लिए यह नाम बदल दिए. ट्रंप ने साउथ पार्क को साउथ अमेरिका का नाम दे दिया.' हमने कहा, 'नाम परिवर्तन में हम भी पीछे नहीं हैं. हमारे देश में इलाहाबाद को प्रयागराज का अधिकृत नाम दिया गया. औरंगाबाद को छत्रपति संभाजीनगर, अहमदनगर को धाराशिव का नाम दे दिया गया. यूपी का मुगलसराय अब दीनदयाल नगर कहलाता है. दिल्ली का राजपथ अब कर्तव्यपथ बन चुका है. प्रधानमंत्री निवास सेवातीर्थ कहलाने लगा. बंगलोर बंगलुरु बना तो मैसूर मैसुरु बन गया. केरल को अब केरलम कहा जाने लगा. मद्रास तो बहुत पहले चेन्नई बन गया. पुराना त्रिवेंद्रम अब तिरुवनंतपुरम कहलाता है. समय के साथ लोगों की जुबान पर नया नाम आ जाता है.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हमारे भारत को विदेशियों ने इंडिया नाम दे दिया था. संविधान में भी दोनों नामों का उल्लेख है. जापान के लोग अपने देश को निप्पॉन और हंगरी के लोग अपने वतन को मग्यार कहते हैं. यूके का मतलब यूनाइटेड किंगडम होता है लेकिन आप उत्तराखंड राज्य चले जाइए. वहां हर होटल, दुकान या प्रतिष्ठान के बोर्ड पर यूके लिखा नजर आएगा. अमेरिका निवासी अपने देश को बोलचाल में स्टेट्स कहते हैं. पुराना बर्मा अब म्यांमार कहलाता है. ब्रिटिश शासनकाल का सिलोन बाद में श्रीलंका बन गया. नाम बदलने से किसी वस्तु की प्रकृति नहीं बदल जाती. पानी कहो या जल, बात एक ही है.'

जब विज्ञान किसान की भाषा बोलता है, तभी ज्ञान खेत में उतरता है

डॉ. एम.एल. जाट सचिव डेयर एवं महानिदेशक भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद

भारत में भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं है; यह हमारी सोच, अनुभव और ज्ञान को समाज से जोड़ने वाली शक्ति है. कृषि के संदर्भ में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है. देश का किसान जब मौसम, मृदा, बीज, जल, कीट-रोग, जैविक खेती, ड्रोन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता या जलवायु-अनुकूल कृषि जैसी नई अवधारणाओं को समझता है, तभी वैज्ञानिक अनुसंधान वास्तव में खेत तक पहुँचता है. इसलिए मेरे लिए हिंदी दिवस केवल राजभाषा के प्रति सम्मान व्यक्त करने का अवसर नहीं, बल्कि विज्ञान को जनभाषा से जोड़ने के संकल्प का दिन है.

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की मूल प्रतिबद्धता अनुसंधान, शिक्षा और विस्तार के माध्यम से भारतीय कृषि को अधिक उत्पादक, टिकाऊ, लाभकारी और जलवायु-सक्षम बनाना है. इस यात्रा में भाषा हमारे लिए केवल प्रशासनिक विषय नहीं, बल्कि प्रौद्योगिकी के अंतिम छोर तक पहुँचने की रणनीतिक आवश्यकता है.

आज देश में कृषि अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान को किसान तक पहुँचाने के लिएआईसीएआर का विशाल विस्तार तंत्र कार्य कर रहा है. कृषि विज्ञान केंद्र इस व्यवस्था की अग्रिम पंक्ति हैं. इनके माध्यम से किसानों, ग्रामीण युवाओं और कृषि से जुड़े हितधारकों को प्रशिक्षण, प्रदर्शन, परामर्श और नई तकनीकों की जानकारी दी जाती है. डिजिटल माध्यमों ने इस संपर्क को और व्यापक बनाया है. किसान सारथी जैसे प्लेटफॉर्म कृषि संबंधी सलाह को किसानों तक उनकी आवश्यकता के अनुरूप पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

यहाँ भाषा का प्रश्न सीधे कृषि उत्पादकता और किसान की आय से जुड़ जाता है. किसान के लिए वैज्ञानिक सलाह तभी उपयोगी है जब वह समय पर मिले, स्थानीय परिस्थिति से जुड़ी हो और ऐसी भाषा में हो जिसे वह सहज रूप से समझ सके. यही कारण है कि आईसीएआर वैज्ञानिक ज्ञान को हिंदी सहित भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराने पर निरंतर बल देता रहा है. हमारी हिंदी पत्रिकाएँ खेती और फल-फूल इसी प्रयास की महत्वपूर्ण कड़ियाँ हैं. खेती मासिक और फल-फूल द्विमासिक हिंदी पत्रिकाओं के रूप में कृषि एवं बागवानी संबंधी वैज्ञानिक जानकारी को सरल और लोकप्रिय शैली में किसानों तथा कृषि-रुचि रखने वाले पाठकों तक पहुँचाती हैं. हमारा अनुभव बताता है कि ज्ञान का प्रभाव तभी अधिक होता है जब वह स्थानीय अनुभव से संवाद करता है. इसलिए भविष्य की कृषि-संचार व्यवस्था में केवल अंग्रेजी से हिंदी या अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद पर्याप्त नहीं होगा. हमें किसान की भाषा में विज्ञान और किसान के अनुभव से विज्ञान—दोनों दिशाओं में संवाद विकसित करना होगा. इस दिशा में डिजिटल कृषि एक बड़ा अवसर है. आईसीएआर की वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार परिषद की वेबसाइट पर एक वर्ष में 4,613 पृष्ठ अपडेट किए गए और 41.89 लाख से अधिक पेज-व्यू दर्ज हुए. यह दर्शाता है कि कृषि ज्ञान की मांग अब केवल संस्थानों और पुस्तकालयों तक सीमित नहीं है; किसान, विद्यार्थी, शोधार्थी और युवा डिजिटल माध्यमों से भी वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त कर रहे हैं.

हिंदी दिवस का एक महत्वपूर्ण आयाम कृषि शिक्षा और विद्यार्थियों से भी जुड़ा है. आज के कृषि विद्यार्थी कल के वैज्ञानिक, उद्यमी, शिक्षक, नीति-निर्माता और कृषि-तकनीकी उद्यमों के नेतृत्वकर्ता होंगे. यदि हम चाहते हैं कि भारत की अगली पीढ़ी कृषि को केवल पारंपरिक आजीविका के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान, नवाचार और उद्यमिता के क्षेत्र के रूप में देखे, तो हमें उसके लिए वैज्ञानिक ज्ञान के अधिक व्यापक और समावेशी माध्यम तैयार करने होंगे. आईसीएआर की हैंडबुक ऑफ एग्रीकल्चर इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण है. यह कृषि विज्ञान के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, वैज्ञानिकों और नीति-निर्माताओं के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ रहा है और इसकी लगभग दो लाख प्रतियाँ बिक चुकी हैं. हमारा अगला लक्ष्य ऐसे ज्ञान-संसाधनों को अधिकाधिक डिजिटल, बहुभाषी और विद्यार्थी-केंद्रित बनाना होना चाहिए.

हिंदी दिवस विशेष

> मेरे लिए हिंदी दिवस का सबसे बड़ा संदेश यही है—विज्ञान की शक्ति तभी पूर्ण होती है, जब उसकी भाषा समाज की भाषा बनती है. हमारा संकल्प होना चाहिए कि आने वाले वर्षों में भारत का कोई किसान केवल इसलिए किसी वैज्ञानिक अवसर से वंचित न रहे कि वह उसकी भाषा में उपलब्ध नहीं था; और कोई विद्यार्थी केवल इसलिए कृषि अनुसंधान से दूर न हो कि वैज्ञानिक ज्ञान उसके लिए सहज नहीं बनाया गया. जब किसान अपनी भाषा में विज्ञान समझेगा, युवा अपनी भाषा में नवाचार करेगा और विद्यार्थी अपनी भाषा में प्रश्न पूछने का साहस करेगा—तभी भारत की कृषि ज्ञान-आधारित, आत्मनिर्भर और भविष्य-सक्षम कृषि बनेगी.
> यही हिंदी दिवस की सार्थकता है.
> यही 'विज्ञान से खेत तक और ज्ञान से युवा तक' हमारी प्रतिबद्धता भी है.

CROSS WORD 12378 - डॉ. सागर खादीवाला

1		2	3	■	4		5
	■	6		7		■	
	■		■	8		9	
10	11	■	12		■	13	
14		15				■	■
■	■	16		■	■	17	18
19	20		■	■	21		
■	22					■	

कांपना (सं.) 3. ओहदा, पैर 4. मिलना, भेंट 5. रामचंद्रजी के पिता 7. सैर सपाटा, घूमना-फिरना 9. श्रवणेंद्रिय 11. गहराई की सीमा12. स्तनपायी जीवों की छाती के दोनों ओर की गोलाकार हड्डियों में से प्रत्येक 15. नापा और तौला हुआ 17. पीला 18. पद्म, सरसिज 20. कोयल 21. सामग्री, संपत्ति, माला

बाएं से दाएं
1. आतंक, तहलका 4. भौंरा (सं.) 6. तलुआ 8. कलाकार 10. प्रशंसा, कथा 12. प्राचीन फारसी कथाओं की वे सुंदर स्त्रियां, जिनके कंधों पर पंख लगे होते थे 13. नाक में पहनने का आभूषण 14. जीवन शैली 16. वह भाषा जिसमें बौद्ध ग्रंथ लिखे गए हैं 17. थूक में मिला पान का रस 19. बल्कि, किंतु 21. शोक 22. किसी कला में निपुण

ऊपर से नीचे
1. पारिजात का पेड़ 2. थरथराहट,

Solution 12377

न	व	रा	त्र	■	ब	ह	स
फ	त	ह	■	ग	ह	रा	■
र	न	■	उ	दा	र	■	■
त	प	स्था	■	■	हा	द	सा
■	र	ह	म	दि	ल	■	र
म	स्त	■	हा	ल	■	सं	ग
स्तू	■	स	न	क	ना	■	भिं
ल	हू	■	ता	श	■	रा	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी. यात्रा होगी. वैचारिक मतभेद वाद विवाद होगा. धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी. मध्य में मित्रों का सहयोग रहेगा. अचल संपत्ति के कार्यो में अधिकता रहेगी. दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी. कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी. कर्मचारियों का सहयोग बना रहेगा. वर्ष के अन्त में पारिवारिक समस्याओं का निवारण होगा. यात्रा आदि का योग है. शारीरिक कष्ट होगा. मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को मित्रों और भाईयों का सहयोग, अल संपत्ति में लाभ होगा. दाम्पत्य जीवन में मधुरता आयेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक समसयाओं में व्यस्तता रहेगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को यात्रा अधिक होगी. शिक्षा में सफलता मिलेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को शारीरिक कष्ट और मानसिक थकान महसूस होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को बैचारिक वाद विवाद होगा. धार्मिक कार्यो में रूचि रहेगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, भावुक, कल्पनाप्रिय, व्यवहार का कुशल होगा, इसकी शिक्षा अच्छी रहेगी, लेखन, अध्ययन, संगीत, काव्य में रूचि रहेगी, ये अच्छे विचारक एवं कलाकार होते हैं, समाज सेवा में इनकी अधिक रूचि रहेगी, राजनैतिक होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

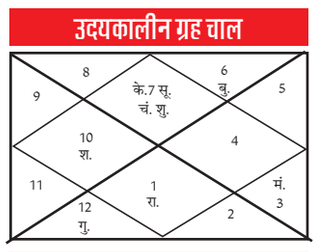

पंचांग

रा.मि. 23 संवत् 2083 भाद्रपद शुक्ल तृतीया चन्द्रवासरे दिन 7/19, चित्रा नक्षत्रे दिन 3/16, ब्रह्म योगे दिन 3/13, गर करणे सू.उ. 5/53, सू.अ. 6/7, चन्द्रचार तुला, पर्व- हरतालिका तीज व्रत, शु.रा. 7,9,10,1,2,5 अ.रा. 8,11,12,3,4,6 शुभांक- 9,2,6.

व्यापार भविष्य

भाद्रपद शुक्ल तृतीया को चित्रा नक्षत्र के प्रभाव से सूत, कपास, गेहू, जौ, चना, सोना, चांदी, में तेजी होगी, गुड़, खांड, धनियां, के भाव में मंदी होगी, जूट पाट, बारदाना, पूर्ववत रहेंगे, भाग्यांक- 5642 है.

मेष- व्यापार से संबंधित कार्यो में सफलता का योग है, वाणी पर संयम रखें. मित्र वर्ग मदद करेंगे.

वृषभ- आकस्मिक धन लाभ होगा, परिचय क्षेत्र का विकास होगा, साहस पराक्रम बढ़ेगा, अतिथि आगमन का योग है.

मिथुन- तीखी बातों से अपनों को नाराज कर सकते हैं, कानूनी मामलों में धैर्य से काम लें.

कर्क- सामाजिक कार्यक्रमों में शामिल होकर खुशी मिलेगी, संबंधों में मधुरता एवं प्रेम बढ़ेगा.

सिंह- विपरीत माहौल में खुद के लिये अनुकूलता बना लेंगे, उलझनें दूर होगी, व्यापार व्यवसाय लाभदायक रहेगा.

कन्या- बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, केरियर को लेकर दूर की यात्रा होगी, मनोकांक्षा की पूर्ति होगी.

तुला- धीमी गति से चल रही योजनाओं में नुकसान होगा, गुप्त शत्रुओं से सावधान रहें, रोगी की चिन्ता होगी,

वृश्चिक- धर्म-कर्ममें आस्था बढ़ेगी, कारोबारी दूर दराज की यात्रा हो सकती है, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी.

धनु- लाभ में संतोष मिलेगा, पुराने रूके कार्यो में सफलता के योग है आत्म विश्वास बढ़ेगा, साहस से कार्य बनेगा.

मकर- मन की बात मित्रों से कह दें, इससे तनावकम होगा, पारिवारिक यात्रा संभव है, किया प्रयास सफल होगा

कुम्भ- व्यर्थ के कार्य परेशान कर सकते हैं, तनाव में फैसला लेना मुश्किल होगा, पुराना पैसा मिलने का योग है.

मीन- धार्मिक आयोजन में शामिल होकर खुशी मिलेगी, अनुभवी लोगों का साथ सफलता दिलायेगा.

SUDOKU 7510

5	9			3			8	7
8	7		1		5			
		2			9			4
	6				2		3	5
3	8		4	1	7		2	9
2	4		6				1	
7			3			8		
			5		8		7	3
9	3			2			6	1

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो, इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7509

7	4	8	3	9	2	1	5	6
2	6	9	5	7	1	8	4	3
3	1	5	4	8	6	7	2	9
5	7	4	8	6	9	3	1	2
8	9	1	2	3	4	6	7	5
6	3	2	1	5	7	4	9	8
4	8	7	6	2	5	9	3	1
9	2	6	7	1	3	5	8	4
1	5	3	9	4	8	2	6	7